महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatama Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997)
नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
इलाहाबाद केंद्र

'आलोचक से संवाद' कार्यक्रम का आयोजन

लेखन कभी डिमांड से नहीं होता : निर्मला जैन

आलोचना साहित्य के जनतंत्र में प्रतिपक्ष की भूमिका निभाती है : गोपेश्वर सिंह

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में **'आलोचक से संवाद'** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में **प्रो. निर्मला जैन, (दिल्ली) एवं प्रो. गोपेश्वर सिंह (दिल्ली)** मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत **महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, इलाहाबाद** केंद्र के प्रभारी **प्रो. संतोष भदौरिया** के स्वागत भाषण से हुई। हाल ही में प्रकाशित प्रोफेसर निर्मला जैन की चर्चित आत्मकथा **'ज़माने में हम'** और प्रो. गोपेश्वर सिंह की आलोचना पुस्तक **'भक्ति आन्दोलन और काव्य'** पर बातचीत केन्द्रित रही। 'आलोचक से संवाद' कार्यक्रम में छात्र/छात्राओं और शोद्यार्थियों ने प्रो. निर्मला जैन की आत्मकथा 'ज़माने में हम' और उनकी आलोचना दृष्टि को समझने के लिए अपनी जिज्ञासाओं को उनके सामने रखा। निधि त्रिपाठी, धीरेन्द्र सिंह, बृजेश कुमार, शिवम सिंह, साहब अली आदि छात्रों ने उनसे सवाल किए। भाषा के सवाल के जवाब में प्रो. निर्मला जैन ने कहा कि मेरी परवरिश उर्दू और हिंदी के बीच दिल्ली की जामा मस्जिद और चाँदनी चौक में हुई है। मुझे हिंदी और उर्दू दोनों का संस्कार प्राप्त हुआ है, इसीलिए मेरी भाषा में इतनी रवानगी है। आत्मकथा में सत्य और यथार्थ के चित्रण के सवाल पर उन्होंने कहा कि मेरी आत्मकथा में जो खुलापन है वह मेरे परिवार और माँ से प्राप्त हुआ है और इसमें जो भी लिखा गया है वह सब सत्य और यथार्थ है। आत्मकथा लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई इस प्रश्न के जबाब में उन्होंने कहा कि मैं अपने मित्र राजेन्द्र यादव से साहित्यिक गलियारों की चर्चा करती थी, तो उन्होंने कहा कि इससे पहले कि आप चली जाए इसको लिख डालिए, उन्होंने प्रोत्साहन दिया वरना पाश्चात्य काव्य शास्त्र से इधर मुड़ना मेरे लिए मुश्किल था। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि लेखन कभी डिमांड से नहीं लिखा जाता। लेखक जो महसूस करता है उसे लिखता है। छात्र निर्भय सिंह के प्रश्न आप अपनी कृति की आलोचना कैसे करेगी के जबाब में उन्होंने कहा कि मैं अपनी कृति की आलोचना करूंगी तो आलोचक क्या करेंगे। जो प्रतिक्रिया इस आत्मकथा में मेरी आयी है जरूरी नहीं वह प्रतिक्रिया हर स्त्री के यहाँ वैसी ही हो। जो रचना आपको आंदोलित करती है उसी पर आप लिखते हैं। हिंदी शोध की दशा-दिशा पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि शोध अब डिग्री हो गई है और डिग्री में गुणवत्तापूर्ण कार्य नहीं कर सकते क्योंकि शोध पर तमाम प्रकार का दबाव होता है। शोध करने वालों की संख्या बढ़ गई है पर गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य करना मुश्किल हो गया है। अपनी सफलता के सवाल पर उन्होंने कहा कि मैं गुरूओं का सम्मान करती हूँ पर मुझे गुरूओं से कुछ नहीं मिला। नौकरी मुझे मेरी काबिलियत पर मिली। डॉ. नगेन्द्र मेरे गुरू थे उन्होंने डी.लिट. के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रो. गोपेश्वर सिंह जी की पुस्तक 'भक्ति आंदोलन और काव्य' पर छात्रों ने कई महत्वपूर्ण सवाल किये। आप आलोचक कैसे बने इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि मैं आलोचक क्यों बना यह मैं नहीं जानता पर शायद मैं आन्दोलन में था और आन्दोलन में तरह-तरह के लोगों से तरह-तरह के सवालों से जूझना पड़ता है। अपनी आलोचना दृष्टि पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि नौकरी में छात्र/छात्राओं से संवाद का सिलसिला बना, बहस करने की आदत लगी शायद बहस करने की आदत ने मुझे आलोचना की तरफ खींचा।

मैं साहित्य के जनतंत्र में प्रतिपक्ष की भूमिका निभाना चाहता था इसलिए मैं आलोचना की तरफ आया। मैं कितना निभा पाउँगा यह मुझे मालूम नहीं है । साहित्य के आलोचकों को पढ़कर मैंने साहित्य की व्याख्या करना नहीं सीखा। मैं विज्ञान का विद्यार्थी था, जे.पी. आन्दोलन में शामिल था उस आन्दोलन ने मुझे इतना प्रभावित किया कि उसका प्रभाव मेरी आलोचना पर है। साहित्य को देखने का जो दृष्टिकोण पाया वह आन्दोलन के जरिए पाया। मैं आलोचक सोचकर नहीं बना था, सोशल एक्टिविस्ट था बहस करना जानता था। मैं अध्यापक हूँ इससे मुझे आलोचना लिखने की प्रेरणा मिली है। मेरे लिए आलोचना लिखना अध्यापक जीवन की सार्थकता की खोज है। भक्तिकाल पर आलोचना पुस्तक लिखने के सवाल पर उन्होंने कहा कि मैंने मध्यकालीन साहित्य पड़ा है तो अपने जीवन में उसे जीना भी चाहता हूँ। शब्द मेरे लिए सिर्फ शब्द नहीं हैं वह मेरे कर्म का हिस्सा है और अगर मेरे लेखन में शब्दों में शक्ति है तो मुझे साहित्य और समाज जगत में सम्मान मिलेगा। आज आलोचक तो बहुत है या किसे जनता का आलोचक कहा जाए इसलिए मैं जनता का आलोचक बनना चाहता हूँ। गाँव से लेकर यहाँ तक पहुँचने के लिए मेरी एक जिद थी पढ़ने की जिद थी बड़े संस्थान में पढ़ाने की जिद थी। हिंदी भक्तिकाल के इतिहास और आलोचना को और पढ़े जाने की आवश्यकता है। भक्ति काल में कन्नड़ में सौ से ज्यादा कवियत्री हैं। ऐसे बहुत सारे सवालों पर हमारा ध्यान नहीं गया है। मीराबाई समेत दूसरी स्त्री रचानाकारों की चिन्ता मेरे लेखन में है। मैं सही रूप से आलोचना में नेम ड्रापिंग के खिलाफ हूँ किसान जीवन का जो कवि होगा वह बड़ा कवि होगा जैसे आग्रह बना कर भी आलोचना की जाती है। तुलसीदास की भक्ति को लेकर जितना लिखा गया उनकी साहित्यिकता को लेकर कम लिखा गया। भक्ति आलोचना और भक्ति काव्य हमें कई तरह से जोड़ता है। मीरा मात्र एक ऐसी भक्त हैं जिसका कोई गुरू नही है कोई शिष्य नहीं, एक सम्प्रदाय निरपेक्ष भक्त कवियत्री हैं मीरा । इसलिए मीरा, तुलसी, सूरदास की भक्ति में अन्तर है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सालेहा ज़र्रीन ने किया इस अवसर पर इलाहाबाद शहर के तमाम साहित्य प्रेमी छात्र/छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

प्रस्तुति
इलाहाबाद केंद्र